ममतामयी – माँ

श्रीमती कृष्णा पत्नी श्री नरेश कुमार
रुड़की।

माता का परिचय मत पूछो, माता है ममता की माटी।
ममता जहाँ स्वयं रहती है, ऐसी है माता की छाती।।

वह ब्रहमा है, आदिकाल से शिशु की सृष्टि सृजत करती है।
है विष्णु, अबोध बालक का, वह पालन–पोषण करती है।।
बालक का संरक्षण करने, माता स्वयं रूद्र हो जाती है।
माता का परिचय मत पूछो, माता है ममता की माटी।।

उसके त्याग, तितीक्षा, तक का, होता कोई हिसाब नहीं है।
उसके अनगिन उपकारों का, कोई, कहीं जवाब नहीं है।।
आँसू पीड़ा के पीकर भी, भूखी–छाती दूध पिलाती।
माता का परिचय मत पूछो, माता है ममता की माटी।।

वह शिल्पी है, शिल्प उसी का ''शिवा–प्रताप' गढ़ा करता है।
बालक 'संत' बना करते, जब माँ का रंग चढ़ा करता है।।
महावीर, गौतम, गाँधी को, सत्य अहिंसा पाठ पढ़ाती।
माता का परिचय मत पूछो, वह तो है शिल्पी की माटी।।

मै माता लाखों पुत्रों की, ममता की गहराई नापो।
कितना संवेदन गहराता, झाँक सको–अन्तर में झॉको।।
स्नेह लुटाती विदा हुई हूँ, फिर भी छाती भर–भर आती।
माता का परिचय मत पूछो, माता है ममता की माटी।।

सूक्ष्म रूप धर कर आती हूँ, अब भी तुम को प्यार पिलाने।
क्योंकि आश लगी है तुमसे मानवता की लाज बचाने।।
भरे थनों की गौ–माता सी, अब भी छाती है अकुलाती।
माता का परिचय मत पूछो, ममता की माटी।।

है विश्वास, न पड़ प्रमाद में, मानवता की लाज रखोगे।
धर्म, राष्ट्र, संस्कृति की रक्षा, करने सदा तैयार दिखोगे।
माता इसी समय के खातिर, दूध पिलाती–प्यार लुटाती।
माता का परिचय मत पूछो, माता है, ममता की माटी।।